38

अन्तिम तुरही

(11:14-19)

पहली छह तुरहियां एक के बाद एक जल्दी-जल्दी बज गई थीं। चौथी तुरही के बाद यूहन्ना ने ''आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊंचे शब्द से यह कहते सुना कि उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण जिनका फूंकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहने वालों पर हाय! हाय! हाय'' (8:13)। पांचवीं तुरही का बजना पहली तीन ''हायों'' अर्थात अथाह गड्ढे में से सताने वाली टिड्डियों का परिचय था। फिर दूसरी घोषणा हुई: ''पहली विपत्ति बीत चुकी, देखो, अब के बाद दो विपत्तियां और आने वाली हैं'' (9:12)। इसके बाद छठी तुरही थी, जिसमें चार स्वर्गदूत ''नरक से आए सवारों'' में बदल गए थे।

उस भयानक सेना के आंखों से ओझल होने पर हम सातवीं तुरही और तीसरी विपत्ति के लिए तैयार थे। इसके बजाय हमें अन्तराल मिल गया था, जो पांच पाठों का है, परन्तु इस लम्बे अन्तराल के बावजूद हमें अन्तिम तुरही को भूलने नहीं दिया गया है। एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने ''शपथ खाकर कहा, अब तो और देर न होगी। बरन सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होगा, तो परमेश्वर का गुप्त मनोरथ ... पूरा होगा'' (10:6ख, 7क)।

लगभग दो अध्यायों तक सातवां स्वर्गदूत हाथ में साज़ लिए बजाने को तैयार था। आखिर में अध्याय 11 के अन्त के निकट वह घोषणा सुनाई देती है जिसका हम अनुमान लगा रहे हैं: ''दूसरी विपत्ति बीत चुकी, देखो, तीसरी विपत्ति शीघ्र आने वाली है'' (11:14)। लम्बे अन्त में, ''सातवें दूत ने तुरही फूंकी, ...'' (11:15क)।

अपनी कल्पनाओं में लम्बे सुर सुनते हुए हम उस भय की प्रतीक्षा करते हैं, जिससे परदा हटने वाला है। अभी तक तुरही का हर दर्शन पहले दर्शन अर्थात लहू मिले ओले और आग (8:7), और पानी लहू बन जाना और लहू ज़हर बन जाना (8:8-11), संसार में अंधेरा हो जाना (8:12), क्लेश देने वाली टिड्डियां (9:1-11), नरक की सेना (9:13-19) से अधिक भयानक था। अन्तिम तुरही और तीसरी विपत्ति से कौन सी भयानक त्रासदियों का पता चलेगा?[1]

पवित्रशास्त्र में, ''अन्तिम तुरही'' का बजना (1 कुरिन्थियों 15:52; KJV)मसीह के द्वितीय आगमन से जुड़ा हुआ है:

> ''और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के

इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे'' (मत्ती 24:31; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17)।

उस समय ''प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। ...'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

(हमें लगता है) हम किसी भी बात के लिए तैयार हैं, परन्तु सातवीं तुरही के फूंके जाने के बाद के दृश्य का विजयी स्वाद हमें चौंका सकता है।

> और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। और यह युगानुयुग राज्य करेगा, और चौबीसों प्राचीन, जो परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करके यह कहने लगे कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज किया है। ...
>
> तब परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है वह खोला गया और उसके मन्दिर में उसकी वाचा का सन्दूक दिखाई दिया; ... (11:15-19)।

इस दृश्य में एक ''विपत्ति देने वाला'' तत्व है: आयत 18 परमेश्वर के क्रोध और दुष्टों के विनाश की बात करती है। इसके अलावा सातवीं तुरही पुस्तक के अन्तिम भाग के परिचय का काम करती है, जिसमें सात कटोरों का क्रोध शामिल है (अध्याय 15 और 16)। तौ भी इन आयतों में ज़ोर परमेश्वर की योजना और परमेश्वर के लोगों की विजय पर है। इस प्रकार हमें याद दिलाया जाता है कि पहली छह तुरहियों द्वारा परिचय कराए गए शानदार दृश्यों का उद्देश्य था: परमेश्वर के विश्वासी रहने वालों के लिए उसके उद्देश्य को पूरा करना।

अध्याय 10 वाले शक्तिशाली स्वर्गदूत ने पहले शपथ खाई थी कि सातवीं तुरही के बजने पर ''परमेश्वर का गुप्त मनोरथ ... पूरा'' हो जाएगा (10:6ख, 7क)। ''परमेश्वर का गुप्त मनोरथ'' शब्द ''यीशु में और उसके द्वारा छुटकारे की परमेश्वर की योजना'' को कहा गया है[2] छुटकारे की परमेश्वर की योजना ''छुटकारे के दिन'' (इफिसियों 4:30) ही पूरी होगी, जब सब उद्धार पाए हुए उसके सिंहासन के इर्द-गिर्द जमा होंगे। इसलिए प्रकाशितवाक्य 11:15-19 छुड़ाए हुओं के आनन्द की प्रतीक्षा की एक और संक्षिप्त परन्तु रोमांचकारी झलक देता है[3]

ये आयतें आरम्भिक मसीही लोगों को शांति देने के लिए थीं और मुझे और आपको सामर्थ देने के लिए रखी गई हैं।

विजय की घोषणा (11:15, 17)[4]

इन आयतों का आरम्भ उसी से होता है, जिसे डब्ल्यू. बी. वैस्ट ने ''प्रकाशितवाक्य

की सम्पूर्ण पुस्तक की मुख्य आयत'' माना है:[5] ''और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य[6] हमारे प्रभु का,[7] और उसके मसीह का[8] हो गया, और वह[9] युगानुयुग राज करेगा'' (आयत 15)।

हम अध्याय 4 और 5 वाले सिंहासन के दृश्य में लौट आए हैं। ''ऊंचे स्वर'' उन चार प्राणियों के हो सकते हैं (4:6-9) या स्वर्गीय गीत हो सकता है (15:11, 12; 7:9, 10)। बोलने वाले से अधिक महत्व इसका था कि बोला क्या गया है: उन स्वरों में घोषणा थी ''जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया।''

अध्याय 13 का अध्ययन करने पर हम संसार के कुछ राज्यों की संक्षेप में समीक्षा करेंगे जो युगों से परमेश्वर के शासन का विरोध करते रहे हैं। उनमें से सबसे शक्तिशाली राज्यों में से एक प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के लिए था: रोमी साम्राज्य। उन राज्यों के विद्रोह की बात भजन संहिता 2:1-5 से ली गई भाषा में 11:18 में की गई है:[10] ''जातियों ने क्रोध किया, ...'' मसीही लोग भजन संहिता 2 की पहली आयतें रोमियों और यहूदियों के यीशु को क्रूस पर चढ़ाने पर सहमत होन पर लागू करते थे (प्रेरितों 4:25-28), परन्तु यह *किसी भी* जाति या समूह पर लागू हो सकती है, जो परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को नकारने की कोशिश करता है।

बेशक ''मानवीय इतिहास में मनुष्यों पर शासन करने वाले कई राज्यों के पीछे, अधिकार देने वाला स्रोत केवल एक है'':[11] शैतान अर्थात ''इस जगत का सरदार'' (यूहन्ना 12:31)।[12] आयत 15 में एक वचन का इस्तेमाल हुआ है: ''जगत का राज्य [एक वचन]।''[13] आयत 15 उस समय का पूर्वाभास कराती है, जब परमेश्वर हर प्रकार के विद्रोह को कुचल देगा और ''युगानुयुग राज करेगा।'' चौबीस प्राचीनों द्वारा गीत की स्थायी उठाने पर वे गाने लगे, ''हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, ... हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज किया है'' (आयत 17)।

शायद हमें दो विचारों पर ज़ोर देना चाहिए कि आयतें 15 और 17 क्या *नहीं* सिखातीं: पहला, वे यह *नहीं* सिखातीं कि मसीही युग का अन्त होने तक परमेश्वर ने राज नहीं किया, और न ही करेगा।[14] परमेश्वर ने जब से संसार के अस्तित्व में आने की बात कही है, तब से वह सारी सृष्टि पर राज कर रहा है। (देखें निर्गमन 15:18; 1 इतिहास 29:11; भजन संहिता 10:16; 29:10.) पहले अपने अध्ययन में हमने ज़ोर दिया था कि अध्याय 4 और 5 के सिंहासन के दृश्य से पता चलता है कि परमेश्वर *अभी भी* राज कर रहा है, अर्थात उसका नियन्त्रण अब भी है।

दूसरा, आयतें 15 और 17 यह *नहीं* सिखातीं कि परमेश्वर का राज्य तब तक कायम नहीं होगा, जब तक इस वर्तमान युग का अन्त नहीं हो जाता। प्रकाशितवाक्य की आरम्भिक आयतों में यूहन्ना ने अपने आपको ''राज्य ... में तुम्हारा सहभागी'' कहा था (1:9)। परमेश्वर अपनी सृष्टि पर सदा से राज करता है, इसलिए उसका राज्य सदा से है।[15] इसके अलावा पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा मसीहा के राज्य की विशेष प्रतिज्ञा पहले ही पूरी हो चुकी है।[16]

मसीहा का राज्य यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु की सेवकाइयों के समय में ''निकट'' था (मत्ती 3:2; 4:17)। यीशु ने कहा कि उसका राज्य उसके अनुयायियों के जीवनकाल में ''सामर्थ सहित'' आना था (मरकुस 9:1)। प्रभु द्वारा ऊपर जाकर यहूदी फसह पिन्तेकुस्त के दिन अपने प्रेरितों पर आत्मा भेजने के समय ''सामर्थ'' आया (प्रेरितों 1:8; 2:1-4)। आत्मा का आना इस बात का प्रमाण था कि यीशु ने परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर राज करना आरम्भ कर दिया है।[17] इस कारण जी. आर. बिसले-मुर्रे ने कहा कि ''राज्य का आरम्भ मसीह के अपने सिंहासन पर ऊपर जाने के समय हुआ।''[18] जॉर्ज लैड ने निष्कर्ष निकाला कि ''ऊंचा किया गया यीशु अपने जी उठने, ऊपर उठाए जाने के बाद से प्रभु और मसीहा के रूप में परमेश्वर की दाहिने ओर सिंहासन पर बैठा है (प्रेरितों 2:34-36; इब्रानियों 1:3; प्रकाशितवाक्य 3:21)।''[19] प्रेरितों 2 के बाद से, उद्धार पाने वाले लोग स्वत: मसीह के राज्य के लोग बन जाते थे (कुलुस्सियों 1:13)।

यदि आयतें 15 और 17 यह नहीं सिखातीं कि परमेश्वर मसीही युग के अन्त में राज करने लगेगा और यह कि मसीहा का राज्य भविष्य में कायम होगा तो वे क्या सिखाती *हैं*? वे यह सिखा रही हैं कि परमेश्वर के राज में आने वाली हर रुकावट एक दिन गिरा दी जाएगी। वे यह सिखाती हैं कि एक दिन सब लोग परमेश्वर की प्रभुता को मानेंगे (देखें रोमियों 14:11)। संक्षेप में वे अन्तत: परमेश्वर के कार्य की *विजय* का जश्न मना रहे हैं!

प्रभु ने चाहा कि उसके लोगों को पता चल जाए कि युद्ध कठिन होगा, परन्तु वह विजय निश्चित थी। कलीसिया एक के बाद एक विजय प्राप्त करके, विजय मार्च करते हुए अन्त में अपने सेनापति के पास अनन्तकाल की पहाड़ी पर विजय पताका फहराने तक बढ़ती जाएगी।[20] टी. बी. एफग्लेसन ने लिखा है:

> कहावत है, ''शोर विजय का ही है''; हमारे कहने का अर्थ है कि किसी युद्ध का परिणाम इतना निश्चित होता है कि केवल एक बार होने के बावजूद परिणाम पहले निकाले निष्कर्ष के अनुसार होता है। यहां यही बात है, अन्तर केवल यही है कि विजय का शोर पहले ही आरम्भ हो चुका है।[21]

जय-जयकार (11:16-18)

विजय की घोषणा के बाद, वचन का हमारा पाठ जय-जयकार की घोषणा से जारी रहता है। पहले की तरह, चौबीस प्राचीन[22] सिंहासन के सामने गिरकर परमेश्वर की महिमा करने लगे (आयत 16)। अध्याय 4 में उन्होंने उसकी महिमा सृष्टिकर्त्ता के रूप में की थी (आयतें 10, 11); अध्याय 5 में उन्होंने छुटकारा दिलाने वाले के रूप में उसकी आराधना की (आयतें 8-10); अब उन्होंने विजय पाने वाले और राजा होने की उसकी घोषणा की:

> ... हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज्य किया है। और अन्यजातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा, और वह समय आ पहुंचा है कि मरे हुओं

> का न्याय किया जाए और तेरे दास भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएं (आयतें 17, 18)।

महिमा का उनका गीत ''प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के शेष भाग के लिए 'विषय वस्तु''' का काम कर सकता है।[23]

प्रभु श्रेष्ठता से राज करेगा (आयत 17)

पहले उन्होंने परमेश्वर के श्रेष्ठ राज्य की बात की थी: ''हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ काम में लाकर राज किया है'' (आयत 17)। अध्याय 19 में परममेश्वर के राज्य पर चर्चा की जाएगी (देखें आयतें 6, 15, 16)।

''जो है, और जो था'' वाक्यांश पर विशेष ध्यान दें। क्या आपको शब्दों में कुछ फर्क नज़र आता है? अध्याय 1 में परमेश्वर को ''जो है, और जो था *और जो* आने वाला *है*'' के रूप में दिखाया गया था (आयत 4; देखें आयत 8)। चार जीवित प्राणियों ने अध्याय 4 में परमेश्वर की महिमा की थी; उन्होंने उसे ''प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, जो है, *और जो आने वाला है*'' (आयत 8) कहा था। परन्तु 11:17 में, ''जो आने वाला है'' विवरण को छोड़ दिया गया है[24] क्योंकि दर्शन में, हमें उस समय में ले जाया गया है, जब प्रभु दोषियों को दण्ड और विश्वासियों को प्रतिफल देने के लिए *आ चुका था*।

प्रभु धर्म से न्याय करेगा (आयत 18क, ग)

पूरी सृष्टि पर अपने अधिकार को कायम करने की परमेश्वर की आवश्यक बात न्याय का दिन होगा। कइयों को परमेश्वर को न्याय करने वाले परमेश्वर के रूप में विचार करना अच्छा नहीं लगता, परन्तु मैरिल टैनी ने ध्यान दिलाया है:

> प्रेम करने वाला परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर भी होना चाहिए क्योंकि वह अपने लोगों से प्रेम कैसे कर सकता है, यदि वह उन्हें अनन्तकाल के लिए दुख सहने दे? या वह उजड़े बाग में जंगली घास की तरह बुराई को कैसे बढ़ने दे सकता है? मनुष्य के कामों का न्याय होना आवश्यक है, क्योंकि बिना न्याय के दिन के धर्मियों की पहचान कभी नहीं होगी और दुष्ट बिना दण्ड के रह जाएंगे।...
>
> ...धार्मिकता की मांग है कि असमानताओं को दूर किया जाए और त्रुटियों को दूर किया जाए।[25]

चौबीस प्राचीनों ने फिर परमेश्वर के न्याय की बात की: ''और अन्यजातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा, और वह समय[26] आ पहुंचा है कि मरे हुओं का न्याय किया जाए'' (आयत 18क)। अध्याय 13, 17 और 19 में हम जातियों की कमी को देखेंगे।

परमेश्वर का क्रोध 14:10; 16:19 और 19:15 जैसी आयतों में दिखाया जाएगा। न्याय का ''वह समय'' और अध्याय 20 के अन्तिम भाग में नाटकीय ढंग से दिखाया जाएगा।

जातियों के ''क्रोध'' करने के बारे में वारेन वियर्सबे ने एक सही प्रश्न पूछा था: ''जातियों को क्रोध करने की क्या आवश्यकता थी?'' उसने लिखा:

> निश्चय ही प्रभु उनके साथ भला और अनुग्रह करने वाला रहा है। उसने उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया है (प्रेरितों 14:15-17; 17:24-31), उन्हें इलाके दिए और अनुग्रह से मनुष्यों को उद्धार का अवसर देने के लिए अपने न्याय को टाल दिया। इससे भी बढ़कर, उसने संसार का उद्धारकर्त्ता बनने के लिए अपने पुत्र को भेज दिया। ... उनके लिए इससे बढ़कर वह क्या कर सकता था?[27]

भजन संहिता 2 में यही प्रश्न पूछा गया है:

> जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश-देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं? यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फैंके (भजन संहिता 2:1-3)।

''जातियों ने क्रोध क्यों किया?'' प्रश्न का उत्तर है ''*क्योंकि वे अपने ढंग से चलना चाहती हैं।* ... किशोर बच्चों की तरह, जातियां किसी प्रकार की बंदिश में नहीं रहना चाहतीं; ...''[28]

एक दिन परमेश्वर उन जातियों के बचकाना क्रोध से अपने धार्मिक क्रोध के साथ पेश आएगा। आयत 18 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''क्रोध'' और ''प्रकोप'' एक ही मूल शब्द से है। परमेश्वर अपने न्याय में मनमानी नहीं करता; यानी उसकी ओर से दिया जाने वाला दण्ड अपराध के अनुकूल ही होता है(देखें गलातियों 6:7)। आयत 18 के पिछले भाग में यही बात की गई, जो यह घोषित करती है कि वह ''पृथ्वी के बिगाड़ने वालों को नष्ट'' करेगा (आयत 18ग)। क्रोध करने वालों को परमेश्वर के क्रोध का पता चल जाएगा। बर्बादी करने वालों को बर्बाद किया जाएगा।

समाज में हम में से परिस्थिति विज्ञान के प्रति जागरूक रहने वालों को ''पृथ्वी के बिगाड़ने वालों'' शब्द पढ़ते हुए प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग का ध्यान आ सकता है। यह प्रासंगिकता बनाई जा सकती है, परन्तु पवित्र आत्मा के मन में मिट्टी और चट्टानों की विशाल गेंद अर्थात जिसके ''गण [एक दिन] बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे'' (2 पतरस 3:12) से भी गम्भीर मुद्दे थे।[29] यूनानी शब्द का अनुवाद ''बिगाड़ना'' का ''अर्थ मिटाना या विलुप्त करना नहीं, बल्कि 'शक्ल बिगाड़ना या भ्रष्ट करना' है (थेयर) जैसे कीड़ा कपड़े को खराब करता है (लूका 12:33) जैसे बुरे विचार अच्छे मन को बिगाड़ते हैं

(1 तीमुथियुस 6:5)।''[30] आत्मा उनकी बात कर रहा था, जिन्होंने इस पृथ्वी को *बिगाड़* दिया है यानी जिन्होंने नैतिक गंदगी, परमेश्वर की निन्दा की गलती और भक्तिहीन अविश्वास से इसे भर दिया है।

यूहन्ना के समय में रहने वाले मसीह लोगों ने पृथ्वी को बिगाड़ने वालों में सबसे ऊपर रोमी साम्राज्य का नाम रखा होगा, परन्तु यह आयत आज ''भ्रष्ट मन'' वाले उन लोगों पर बिल्कुल फिट बैठती है (1 तीमुथियुस 6:5; KJV) जो उस संसार को, जिसमें मैं और आप रहते हैं, बिगाड़ते हैं।

प्रभु अनुग्रह पूर्वक प्रतिफल देगा (आयत 18ख)

न्याय का दिन उन लोगों के साथ, जिन्होंने परमेश्वर का विरोध किया था ''हिसाब करने'' का दिन ही नहीं होगा, यह रोमांच से भरा वह समय होगा, जब परमेश्वर अपनों को पहचान कर उन्हें प्रतिफल देगा। चौबीस प्राचीनों ने इसे ''तेरे दास भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे-बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए''[31] (आयत 18ख) के रूप में वर्णित किया है।

उन प्रतिफलों की पहचान के लिए इस्तेमाल किए गए कुछ शब्दों में अन्तर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सब मसीही संत या पवित्र लोग (परमेश्वर की सेवा के लिए ''अलग किए हुए'') हैं, जबकि सब मसीही भविष्यवक्ता (परमेश्वर के वक्ता) नहीं हैं। परन्तु ''दास,'' ''भविष्यवक्ताओं,'' ''पवित्र लोगों,'' ''जो तेरे नाम से डरते हैं'' और ''छोटे-बड़ों'' पांच-छह अलग-अलग लोगों की सूची देने के लिए नहीं, बल्कि यह, यह कहने का एक आवश्यक ढंग था कि *सब* विश्वासियों को प्रतिफल मिलेगा, चाहे वे जो भी हों, चाहे उन्होंने जो भी सेवा की हो, चाहे संसार द्वारा उन्हें ''महत्वपूर्ण'' माना गया हो या नहीं।

यह एहसास करना कि प्रभु को उस सबका जो आप करते हैं, पता है और वह उसके लिए आपको शाबाशी देता है और एक दिन वह आपको उसका प्रतिफल देगा, शांति देने वाला नहीं है?

> आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है ... (मत्ती 5:12)।
>
> ... हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मज़दूरी पाएगा (1 कुरिन्थियों 3:8)।
>
> ... तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी (कुलुस्सियों 3:24)।
>
> ... [परमेश्वर] अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6)।
>
> अपने विषय में चौकस रहो; ... कि उसका पूरा प्रतिफल पाओ (2 यूहन्ना 8)।

प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्यायों में हमारे प्रतिफल के बारे में हमें संकेत दिए जाएंगे, परन्तु विश्वासियों के लिए परमेश्वर द्वारा रखे सभी आश्चर्यों की अभी हम में योग्यता नहीं है। ''परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, ... परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं'' (1 कुरिन्थियों 2:9)। हमारे पास जो संकेत हैं, उनसे हम भयभीत और पूर्वधारणा से भर जाते हैं।

वफ़ादारों के लिए परमेश्वर के प्रतिफल की प्रतिज्ञा ने आरम्भिक मसीही लोगों को कठिन समयों में दृढ़ बनाए रखा था। इसी प्रकार कठिन परिस्थितियों में से गुजरते समय यह हमें भी कायम रख सकता है।

परमेश्वर की वफ़ादारी का आश्वासन (11:19)

हमारे वचन पाठ की शांति समाप्त नहीं हुई है। आयत 19 में हमें महिमा की बातों के लिए परमेश्वर का प्रत्युत्तर मिलता है। अचानक गीत खामोशी में बदल गया; फिर यूहन्ना के सामने ईश्वरीय महिमा के दर्शन का विस्फोट हुआ:[32]

> और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है,[33] वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उस की वाचा का सन्दूक दिखाई दिया, और बिजलियां और शब्द और गरजन और भूकम्प हुए, और बड़े ओले पड़े (आयत 19)। (वाचा का सन्दूक का चित्र देखें।)

इस दर्शन से निश्चय ही यहूदी अवधारणाओं से परिचित लोगों के मन में आश्चर्य और आनन्द आ गया। पुराने नियम के रूपक से अपरिचित लोगों के लिए, कुछ शब्दों की व्याख्या की जानी आवश्यक है:

निर्गमन 25:10-22 वाचा के सन्दूक की बात बताता है। यह सोने से ढका, लगभग चार फुट लम्बा और 2-1/2 फुट ऊंचा और चौड़ा लकड़ी का एक सन्दूक था।[34] सन्दूक का ढक्कन, जिसे ''प्रायश्चित का ढकना'' कहा जाता था, उसमें अन्दर की ओर मुंह किए प्रायश्चित के ढकने की ओर झांकते हुए दो करूब[35] थे। सन्दूक के बारे में, परमेश्वर ने मूसा से प्रतिज्ञा की, ''और मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूंगा; ... उन सभों के विषय में मैं प्रायश्चित के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूंगा'' (निर्गमन 25:22)। यहूदी लोगों के मन में सन्दूक परमेश्वर की महिमा और उपस्थिति का पर्याय था।

सन्दूक के अन्दर पत्थर की दो पट्टियां थीं, जिनके ऊपर दस आज्ञाएं लिखी गई थीं (व्यवस्थाविवरण 10:3-5)।[36] ये आज्ञाएं उस वाचा का जो परमेश्वर ने इस्राएल से बान्धी थीं, सार थीं (व्यवस्थाविवरण 5:2-22), इसीलिए इसका नाम ''वाचा का सन्दूक'' पड़ा।[37] ''वाचा'' शब्द यहूदियों के लिए बहुमूल्य था।[38]

> ''वाचा'' पुराने नियम के किसी भी शब्द से जो इस्राएलियों को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पक्का और भरोसेयोग्य होने की बात याद दिलाता है, बढ़कर है। यिर्मयाह मसीहा के द्वारा दिए जाने वाले उद्धार की बात बताते हुए वाचा की

भाषा का इस्तेमाल करता है, ''मैं उनके साथ एक सदा की वाचा बान्धूंगा, ...'' (यिर्मयाह 32:40, RSV)। अब सम्भाला हुआ यह वचन फिर याद दिलाया जाता है और दोबारा दोहराया जाता है।[39]

सन्दूक को परम पवित्र स्थान में रखा गया था,[40] पहले तम्बू में (निर्गमन 26:33, 34) और बाद में मन्दिर में (1 राजा 8:6)।[41] इसे एक ही व्यक्ति (महायाजक) द्वारा वर्ष में केवल एक बार (प्रायश्चित के दिन) अपने और लोगों के प्रायश्चित के लिए परम पवित्र स्थान में परदे में से जाने पर ही देखा जाता था (लैव्यव्यवस्था 16:11-17; देखें इब्रानियों 9:7)। यहूदी धर्म में परमेश्वर की उपस्थिति में जाने और उस मूल्यवान सन्दूक को देखने की अनुमति से बढ़कर सम्मान कोई नहीं था।

इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए,[42] इस दृश्य के खुलने पर आरम्भिक पाठकों के रोमांच की कल्पना करें: ''और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर में उसकी वाचा का सन्दूक दिखाई दिया'' (आयत 19क)। परमपवित्र स्थान का खुलना परमेश्वर की निजी उपस्थिति की प्रतिज्ञा थी (21:3),[43] जबकि सन्दूक इस बात को याद दिलाता था कि परमेश्वर वाचा का परमेश्वर है, जो अपनी प्रतिज्ञाओं पर खरा उतरता है।

स्वर्ग का सबसे बड़ा आकर्षण सोने की गलियां, चमचमाती नदियां या अनोखे पेड़ नहीं, बल्कि हमारे विश्वासयोग्य प्रभु की आत्मीय उपस्थिति है। अन्त में वहां पर ''परमेश्वर का डेरा मनुष्यों की बीच में [होगा]; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा'' (21:3)!

इन आयतों की समाप्ति परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ के स्वर्गीय चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन से होती है: ''और बिजलियां और शब्द और गरजन और भूकम्प हुए, और बड़े ओले पड़े'' (आयत 19)।[44]

सारांश

''अन्तिम तुरही'' का दर्शन यही है। एक अर्थ में हमने अन्तिम तुरही के दर्शन का समापन नहीं देखा है; क्योंकि जैसे पहले ही निर्धारित था, सातवीं तुरही इस पुस्तक के पिछले भाग के और विशेषकर क्रोध के सात कटोरों के परिचय का काम करती है। तौ भी उस पल के सम्बन्ध में जब ''मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:52ख) अपने आप को आश्चर्य से भरने के लिए हमने काफी कुछ देख लिया है! कब्र के शिलालेख पर जो ग्लेन पेस के[45] पिता की कब्र है, ये शब्द लिखे हैं ''महिमा पूर्ण जी उठने की आशाओं में।''

विंस्टन चर्चिल का जनाज़ा खत्म होने से पहले, अंग्रेज़ राजनयिकों की मृत्यु पर बजाया जाने वाला पारम्परिक बिगुल बजाया गया। फिर जैसा कि चर्चिल की इच्छा थी, सैनिकों को जगाने वाला बिगुल (रिवेल) बजाया गया। यह जी उठने में अपने विश्वास की चर्चिल की पुष्टि थी। क्या अन्तिम तुरही का बजना कुछ ऐसा है, जिसकी आप राह देख रहे हैं या जिससे आप डरते हैं?

सातवीं तुरही का दर्शन सताए जा रहे मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया था। परमेश्वर चाहता था कि वे जान जाएं कि उनके शत्रु उनकी हत्या कर सकते हैं, परन्तु वे उन्हें हरा नहीं सकते। वह अपने लोगों को बताना चाहता था कि ''सबसे बुरी चीज़ें अन्तिम कभी नहीं होतीं।''[46] वह उन्हें बताना चाहता था कि यदि वे विश्वासी बने रहे तो अन्त में विजयी होंगे!

सातवीं तुरही का बजना आपके लिए विजय का दिन होगा या पराजय का? यदि आप प्रभु के आने के लिए तैयार नहीं हैं, तो तैयार होने का समय आज ही है![47]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन में मैरिल सी. टैनी ने अध्याय 11 पर एक पाठ प्रकाशित किया, जो ''अनन्तकालिक राज्य'' के विषय पर केन्द्रित था। उसने इस आयत से तीन मुख्य बातें निकालीं: (1) राज्य की सामर्थ, (2) राज्य का कार्यक्रम और (3) राज्य का स्थायित्व।

टिप्पणियां

[1]''हाय'' की घोषणाओं में यह संकेत है कि हर नई ''हाय'' पहले वाली से अधिक बुरी होगी। एक अर्थ में, तीसरी हाय सबसे भयंकर है ''क्योंकि इससे कोई अपील नहीं है'' (माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975], 107)। [2]इस पुस्तक में ''बड़े संदेश वाली एक छोटी पुस्तक'' पाठ देखें। [3]यह हो सकता है कि 11:15-19 रोमी साम्राज्य पर परमेश्वर के कार्य की विजय की तस्वीर ही हो, परन्तु भाषा सब बातों को समेटने के लिए अधिक उपयुक्त लगती है। उदाहरण के लिए, जो है और जो था के रूप में परमेश्वर का परिचय, न कि जो *आने वाला* है (आयत 17) निश्चय ही यह प्रभाव देता है कि विवरण में हम इस संसार के अन्त तक पहुंच गए हैं (इस पाठ में आयत 17 पर नोट्स देखें)। जैसा कि हमने परिचय में कहा था, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हमें बार-बार अन्त तक ले जाया जाता है और फिर वापस जाकर हम थोड़े से अलग दृष्टिकोण से नई शुरुआत करते हैं। ''अन्तिम बातों'' का यह विचार अध्याय 12 में यीशु के जन्म के वृत्तांत के बाद आएगा। [4]इस पाठ के मुख्य शीर्षक और उपशीर्षक वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, द *बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 600-1 से लिए गए थे। [5]डब्ल्यू बी. वेस्ट जूनि., *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासेस,* बॉब प्रिचर्ड द्वारा संपादित (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 85. ऐसी ही टिप्पणी जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 161 में की गई थी। [6]''हमारे प्रभु का राज्य'' वाक्यांश में ''राज्य'' शब्द मूल शास्त्र में नहीं मिलते, परन्तु व्याकरण के ढांचे में उनका संकेत मिलता है। [7]''प्रभु'' (मालिक, हाकिम) शब्द का इस्तेमाल पिता के लिए या पुत्र के लिए हो सकता है। इस आयत में, यह पिता के लिए है। [8]''उसके मसीह'' (मूलत:, ''उसके अभिषिक्त'') यीशु में पूरी हुई मसीहा से जुड़ी पुराने नियम की भाषा हो सकती है (देखें भजन संहिता 2:2)। [9]क्या यह ''वह'' पिता के लिए है या पुत्र के लिए? कई लोग 1 कुरिन्थियों 15:24-28 के आधार पर, यकीन से दावा करते हैं कि ''वह'' का अर्थ पिता ही है। हो सकता है कि वे सही भी हों। दूसरी ओर, वचन यहां ज़ोर देता है कि राज्य ''हमारे प्रभु'' और

''उसके मसीह'' दोनों का है, जिसका अर्थ यह होगा कि दोनों मिलकर उसके हाकिम हैं। राबर्ट माउंस ने यह विश्वास जताया था कि ''एक वचन ... इस इकट्ठी सम्प्रभुता की एकता पर ज़ोर देता है'' (राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977], 231)। जी. आर. बिसले मुर्रे ने कहा कि यहां यूहन्ना के लिए पिता या पुत्र के अर्थ के प्रश्न की बात का कोई महत्व नहीं, ''क्योंकि उसके लिए प्रभु और मसीह चिरस्थायी एकता है'' (जी. आर. बिसले मुर्रे, *द बुक ऑफ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974], 189)। [10]भजन संहिता 2 को ''शाही भजन'' कहा गया है और इसका इस्तेमाल इस्राएल में नये राजा के राज्याभिषेक जैसे समयों में होता था। इस भजन में जातियों का विद्रोह इस तथ्य से जुड़ा था कि किसी नये राजा का राज्यभिषेक होने पर आस-पड़ोस के देश इस्राएल को हराने के लिए इस उलझन का लाभ उठाने की कोशिश करते थे। इस अर्थ के अलावा, यहूदी लोग इस बात को समझते थे कि भजन संहिता 2 के मसीहा से जुड़े संकेत हैं और अन्ततः यह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के राज्याभिषेक के लिए था। भजन संहिता 2 नये नियम में अक्सर दोहराया गया है।

[11]लैड, 161. [12]आवश्यकता हो तो आप यह ज़ोर देने के लिए कि शैतान को केवल यही अधिकार है, जो परमेश्वर ने उसे दिया है और यह कि परमेश्वर ने शैतान और उसके दूतों को संसार में उतना ही अधिकार दिया है, जिससे परमेश्वर का अपना उद्देश्य पूरा हो, रुक सकते हैं। परन्तु प्रकाशितवाक्य 11:15-19 के संदेश को समझने के लिए इस भारी विषय की समझ होना आवश्यक नहीं है। [13]KJV में ''राज्य'' बहुवचन में है, परन्तु हस्तलिपि का प्रमाण एक वचन ''राज्य'' का समर्थन करता है। [14]वास्तव में आयत 17 में भूतकाल का इस्तेमाल किया गया है। इस आयत को मूलतः इस प्रकार पढ़ा जाता है ''और राज *किया*।'' (देखें KJV. NASB वाली मेरी बाइबल के मार्जिन नोट में ''[मूलतः], *didst reign*'' है)। [15]''राज्य'' शब्द का मूल अर्थ ''अधिकार, शासन, प्रभुता'' है। [16]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी, मई 1995) के अंक ''ऐक्ट्स, 1'' के पृष्ठ 52 पर अतिरिक्त लेख ''द इस्टैब्लिशमेंट ऑफ़ द किंग्डम/चर्च'' देखें। [17]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले कई लोग यह मानते हैं कि ''कुछ अर्थ में'' यीशु आज राज कर रहा है, परन्तु फिर भी वे ज़ोर देते हैं कि मसीहा का राज्य तब तक स्थापित नहीं होगा जब तक मसीह यरूशलेम नगर से एक हज़ार वर्ष तक राज करने के लिए पृथ्वी पर वापस नहीं आ जाता। बाइबल सिखाती है कि मसीह अपने राज्य पर *अब* राज कर रहा है। [18]बिसले-मुर्रे, 189. [19]लैड, 162. [20]यह वाक्य वेस्ट, 85-86 से लिया गया था।

[21]टी. एफ. ग्लेसन, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* द कैम्ब्रिज बाइबल कमैंट्री ऑन द न्यू इंग्लिश बाइबल सीरीज़ (कैम्ब्रिज, इंग्लैंड: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1965), 71. [22]चौबीस प्राचीनों पर टिप्पणियों के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' पाठ देखें। [23]वियर्सबे, 600. [24]KJV में "and art to come"है, परन्तु उस वाक्यांश के जोड़े जाने को हस्तलिपियों के प्रमाण का समर्थन नहीं है। [25]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 58. [26]अनुवादित शब्द ''समय'' यूनानी शब्द *kairos* से लिया गया है, जिसका अर्थ आमतौर पर ''उपयुक्त समय'' के लिए होता है। [27]वियर्सबे, 600. [28]वही। [29]मैं रक्षण के प्रयासों को नकारने की कोशिश नहीं कर रहा हूं, बल्कि मैं चीज़ों को परिप्रेक्ष्य में रखने की कोशिश कर रहा हूं। कइयों को ''नई पृथ्वी'' (प्रकाशितवाक्य 21:1) अर्थात हमारी नई (आत्मिक) देहों के लिए नये (आत्मिक) निवास से बढ़कर पृथ्वी के नाश होने की चिन्ता अधिक है। [30]होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 263. होमेर हेली सी. जी. विल्के और विलिबल्ड ग्रिम्म, *''diaphtheiro, '' ए, ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* अनुवाद व संशोधन जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, तिथि नहीं),143 में दी परिभाषा उद्धृत कर रहा था।

[31]प्रकाशितवाक्य में ''छोटे-बड़ों'' वाक्यांश के और इस्तेमालों के लिए देखें 13:16; 19:5; 20:12. [32]यह वाक्य ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 71 से लिया गया था। स्पष्टतया यूहन्ना को इस बार मन्दिर में छोटी सी झलक पाने की ही

अनुमति थी। 15:5 में इसे दोबारा खोला जाएगा। [33]पहले हमने उस मन्दिर में, जिसे यूहन्ना नापने वाला था (11:1, 2) और स्वर्ग वाले मन्दिर में अन्तर देखा था। (इस पुस्तक के पाठ ''क्या हम नाप में पूरे हैं?'' देखें।) प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर *स्वर्ग वाले* मन्दिर का उल्लेख मिलता है (3:12; 7:15; 14:15, 17; 15:5, 6)। [34]सन्दूक 2-1/2 हाथ लम्बा और 1-1/2 हाथ चौड़ा व ऊंचा था। हाथ की लम्बाई लगभग 18 इंच होती थी। [35]करूब पर संक्षिप्त चर्चा के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''वस्तुओं को ध्यान में रखना'' पाठ देखें। [36]पत्थर की पट्टियों के अलावा, सन्दूक में या इसके पास मन्ना और हारून की छड़ी, जिसमें फूल-फल आ गए थे, भी रखे थे (निर्गमन 16:32-34; गिनती 17:10; इब्रानियों 9:4)। स्पष्टतया किसी समय वे हटा दिए गए या खो गए थे (1 राजा 8:9)। [37]''वाचा का सन्दूक'' वाक्यांश गिनती 10:33; 14:44; व्यवस्थाविवरण 10:8; 31:9, 25, 26 में मिलता है। दस आज्ञाओं वाली पट्टियों को साक्षी (निर्गमन 31:18) कहा जाता था इसलिए सन्दूक को आमतौर पर ''साक्षी का सन्दूक'' कहा जाता है (जैसे निर्गमन 25:22; 26:33, 34; लैव्यव्यवस्था 16:13 में)। [38]''वाचा'' शब्द दो पक्षों के बीच हुए समझौते के लिए इस्तेमाल होता है। पुरानी वाचा इस्राएल के साथ परमेश्वर का समझौता था। नई वाचा परमेश्वर और मसीही लोगों के बीच समझौता है। परमेश्वर अपना वायदा पूरा करता है और समझौते का अपना भाग निभाता है। [39]अर्ल एफ. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एंड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 197. [40]इसके आरम्भिक इतिहास में सन्दूक को आमतौर पर यह ज़ोर देने के लिए कि परमेश्वर उनकी अगुआई कर रहा था, इस्राएलियों के आगे-आगे ले जाया जाता था। (उदाहरण के लिए देखें यहोशू 4:9, 10; 6:1-20.) बाद में इसे परम पवित्र स्थान में रख दिया गया था।

[41]इस पुस्तक में मन्दिर का रेखाचित्र देखें। [42]एक और पृष्ठभूमि का विवरण, जो आरम्भिक पाठकों के मन में होगा, वह यह है कि इस्राएल के राज्य के अन्तिम दिनों में सन्दूक खो गया था। यहूदी परम्परा के अनुसार मन्दिर के साथ नष्ट होने से बचाने के लिए सन्दूक को छिपा दिया गया था। अधिक सम्भावना यही है कि बाबुल के लोगों द्वारा 586 ई.पू. में मन्दिर और यरूशलेम नगर को नष्ट करने के समय सन्दूक भी नष्ट हो गया था (2 राजा 25:9)। कइयों का विचार है कि मन्दिर के अन्य भण्डार ले जाने के समय मिस्र का राजा इसे ले गया था (1 राजा 14:25, 26)। (निश्चय ही, सांसारिक सन्दूक के साथ क्या हुआ, इसका कोई महत्व नहीं है, प्रकाशितवाक्य 11 हमें बताता है कि इसकी आत्मिक नकल स्वर्ग में है, और यही बात महत्वपूर्ण है।) [43]क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय मन्दिर का परदा फट गया था (मत्ती 27:51), जो इस बात का संकेत था कि परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग खुल गया है (देखें इब्रानियों 10:19-22)। जिसका आरम्भ यीशु ने किया था, वह अन्त में हमारे स्वर्ग में जाने पर पूरा मिलेगा। [44]ये सब परमेश्वर की सामर्थ और न्याय के प्रतीक हैं, जिन्हें हमने प्रकाशितवाक्य में पहले कई बार देखा है। यह आयत परमेश्वर की वाचा के प्रेम के साथ उसके धार्मिक क्रोध के प्रतीकों को मिला देती है। [45]ग्लेन पेस जुडसोनिया, आरकैंसा में मसीह की कलीसिया के प्रचारक हैं। [46]चर्चिल का उदारहण और उद्धरण सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस 7 अप्रैल 1991 को दिए जॉन रिस्से के संदेश ''भविष्यवक्ताओं और शहीदों की कलीसिया'' से लिए गए हैं। [47]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को यह बताने के लिए कि प्रभु के आने के लिए कैसे तैयार होना है, विचारों के लिए ''परमेश्वर के गवाह'' पाठ में टिप्पणी 40 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि ''तुरहियां चेतावनी देने के लिए हैं,'' परन्तु हमने यह भी देखा है कि तुरहियों का इस्तेमाल घोषणा करने के लिए किया जाता था। सातवीं तुरही में यह बताते हुए कि परमेश्वर का विरोध करने वाले यदि मन नहीं फिराते तो उनका क्या होगा, चेतावनी की बात तो है, इसमें परमेश्वर के वफ़ादार रहने वालों को मिलने वाली प्रतिफल की घोषणा भी है। आप इस घोषणा

को संक्षेप में क्या कहेंगे ?

2. पाठ के अनुसार, 11:15 और 11:17 में क्या शिक्षा है और उनमें क्या शिक्षा *नहीं* है ?
3. क्या आपको लगता है कि इस बात का कोई महत्व है कि ''जो आने वाला है'' की प्रसिद्ध बात आयत 17 में परमेश्वर के विवरण से निकाल दी गई है ?
4. यह ज़ोर देना क्यों आवश्यक है कि परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर होने के साथ-साथ अनुग्रह करने वाला परमेश्वर भी है ?
5. 11:14-19 में परमेश्वर के न्यायों के सम्बन्ध में, ''अपराध के अनुकूल दण्ड'' कैसे है ?
6. ''पृथ्वी के बिगाड़ने वाले'' वाक्यांश पढ़ने पर *आपके* ध्यान में कौन आता है ?
7. क्या आपको यह जानना शांति देने वाला है कि परमेश्वर हमारे प्रयासों का प्रतिफल देता है ? (प्रतिफलों के विचार को बाइबल की इस शिक्षा से कैसे मिलाया जा सकता है कि हम अपना उद्धार कमा नहीं सकते ?)
8. ''वाचा'' शब्द का क्या अर्थ है ? यहूदियों को इस शब्द से सुकून क्यों मिलता था ? हमें इससे सुकून या शांति कैसे मिल सकती है ?
9. वाचा के सांसारिक सन्दूक के बारे में और स्वर्ग में उसके आत्मिक स्वरूप का महत्व बताएं।
10. यदि कोई ''अन्तिम तुरही'' के बजने के लिए तैयार नहीं तो उसे क्या करना चाहिए ?

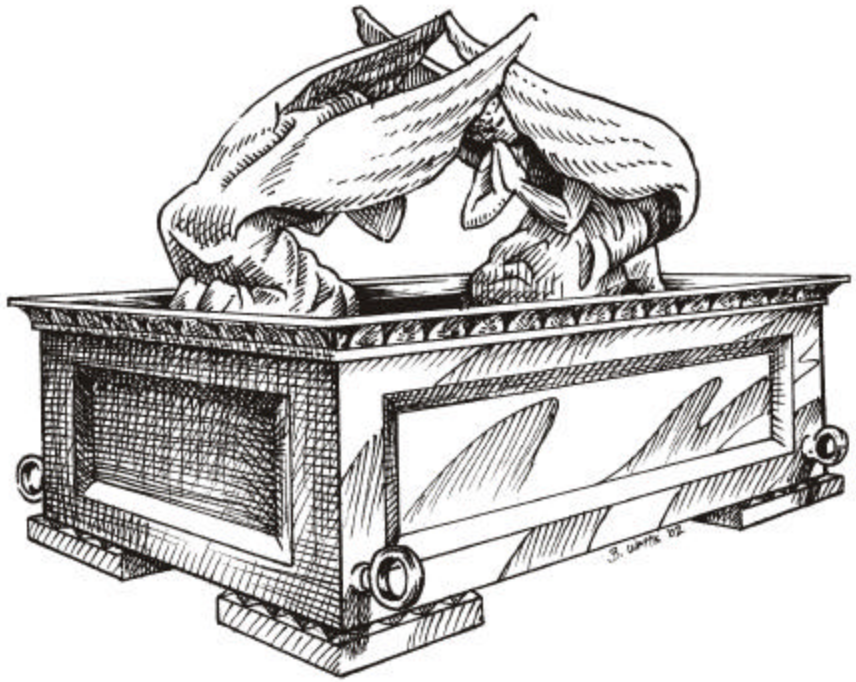

वाचा का सन्दूक (11: 19)